लेखांकन अनुपात

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» लेखांकन अनुपात का अर्थ

प्रश्न 1 (आसान). अगर एक दुकान की बिक्री 10,000 रुपये है और शुद्ध लाभ 1,000 रुपये है, तो शुद्ध लाभ प्रतिशत क्या होगा?
उत्तर – 10%

प्रश्न 2 (आसान). लेखांकन अनुपात को किन-किन रूपों में व्यक्त किया जा सकता है? कोई दो रूप बताओ।
उत्तर – भिन्न, प्रतिशत, आवर्त।

प्रश्न 3 (मध्यम). एक कंपनी का संचालन व्यय (Operating Expenses) 50,000 रुपये है और उसकी बिक्री 2,50,000 रुपये है। संचालन व्यय का बिक्री से अनुपात ज्ञात कीजिए।
उत्तर – 20%

प्रश्न 4 (कठिन). क्या फर्नीचर और कच्चे माल की खरीद के बीच का अनुपात निकालना उपयोगी होगा? क्यों या क्यों नहीं?
उत्तर – नहीं, क्योंकि इन दोनों के बीच कोई सीधा या तार्किक वित्तीय संबंध नहीं है, जिससे कोई सार्थक जानकारी नहीं मिलेगी।

» अनुपात विश्लेषण के उद्देश्य

प्रश्न 5 (आसान). अनुपात विश्लेषण का एक मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – व्यवसाय के उन क्षेत्रों को जानना जिन्हें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रश्न 6 (आसान). अनुपात विश्लेषण हमें कंपनी की 'तरलता' के बारे में क्या बताता है?
उत्तर – यह कंपनी की छोटी अवधि के कर्जों को चुकाने की क्षमता के बारे में बताता है।

प्रश्न 7 (मध्यम). एक कंपनी का ऋण शोधन क्षमता अनुपात कम होना क्या दर्शाता है, और इसे जानने का क्या उद्देश्य है?
उत्तर – कम ऋण शोधन क्षमता अनुपात दर्शाता है कि कंपनी अपने लंबे समय के कर्जों को चुकाने में शायद सक्षम न हो। इसे जानने का उद्देश्य है कि लेनदार और निवेशक कंपनी की वित्तीय स्थिरता को समझ सकें।

प्रश्न 8 (कठिन). अनुपात विश्लेषण 'SWOT' विश्लेषण में कैसे मदद करता है? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – SWOT (Strengths, Weaknesses, Opportunities, Threats) विश्लेषण में अनुपात हमें कंपनी की ताकत (जैसे उच्च लाभप्रदता अनुपात), कमजोरियां (जैसे कम तरलता अनुपात), अवसरों (जैसे उद्योग में बढ़ती बिक्री अनुपात), और खतरों (जैसे बढ़ते लागत अनुपात) को पहचानने में मदद करते हैं।

» अनुपात विश्लेषण के लाभ

प्रश्न 9 (आसान). अनुपात विश्लेषण का एक मुख्य लाभ क्या है?
उत्तर – यह जटिल वित्तीय आंकड़ों को सरल बनाता है।

प्रश्न 10 (आसान). क्या अनुपात विश्लेषण प्रबंधन को निर्णय लेने में मदद करता है?
उत्तर – हाँ, यह सही और प्रभावी निर्णय लेने में मदद करता है।

प्रश्न 11 (मध्यम). अनुपात विश्लेषण कंपनी के किन क्षेत्रों की पहचान करने में सहायक होता है?
उत्तर – यह समस्या क्षेत्रों और मजबूत पहलुओं दोनों की पहचान करने में मदद करता है।

प्रश्न 12 (कठिन). SWOT विश्लेषण में अनुपात कैसे मदद करते हैं? समझाओ।
उत्तर – अनुपात बिज़नेस में होने वाले बदलावों को समझने में मदद करते हैं, जिससे प्रबंधन वर्तमान की कमजोरियों, ताकतों, अवसरों और खतरों (SWOT) को बेहतर ढंग से समझ पाता है और सही रणनीति बना पाता है।

» अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ

प्रश्न 13 (आसान). अनुपात विश्लेषण के लिए कौन से आँकड़े उपयोग किए जाते हैं?
उत्तर – लेखांकन आँकड़े या वित्तीय विवरण के आँकड़े।

प्रश्न 14 (आसान). क्या अनुपात विश्लेषण गुणात्मक पहलुओं को ध्यान में रखता है?
उत्तर – नहीं, अनुपात विश्लेषण केवल मात्रात्मक (मौद्रिक) पहलुओं को ध्यान में रखता है।

प्रश्न 15 (मध्यम). यदि दो कंपनियाँ अलग-अलग लेखांकन नीतियों का उपयोग करती हैं, तो उनके अनुपातों की तुलना करना क्यों मुश्किल हो सकता है?
उत्तर – अलग-अलग नीतियां (जैसे स्टॉक मूल्यांकन या मूल्यह्रास) परिणामों को अलग-अलग दिखाती हैं, जिससे तुलना असंगत हो जाती है क्योंकि उनके आधारभूत आँकड़े अलग-अलग मानकों पर बने हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). मूल्य स्तर में बदलावों की उपेक्षा अनुपात विश्लेषण की एक महत्वपूर्ण सीमा क्यों है, खासकर बढ़ती महंगाई के दौर में?
उत्तर – बढ़ती महंगाई में पैसे का मूल्य घटता है। अगर वित्तीय विवरण पुरानी कीमतों पर संपत्तियों को दिखाते हैं, तो वर्तमान बाज़ार मूल्य और पुरानी लागत में बहुत अंतर आ जाता है। इससे जो अनुपात निकलते हैं, वे कंपनी की वास्तविक आर्थिक स्थिति को गलत तरीके से दर्शा सकते हैं और विभिन्न वर्षों की तुलना अर्थहीन हो सकती है।

» अनुपातों के प्रकार: क्रियात्मक वर्गीकरण

प्रश्न 17 (आसान). वह अनुपात जो कंपनी की तुरंत देनदारियाँ चुकाने की क्षमता बताता है?
उत्तर – तरलता अनुपात

प्रश्न 18 (आसान). कौन सा अनुपात दीर्घकालिक देनदारियों पर ध्यान देता है?
उत्तर – ऋण शोधन क्षमता अनुपात

प्रश्न 19 (मध्यम). एक कंपनी अपनी संपत्तियों का कितना कुशल उपयोग कर रही है, यह जानने के लिए कौन सा अनुपात देखेंगे?
उत्तर – क्रियाशीलता अनुपात

प्रश्न 20 (कठिन). अगर कोई निवेशक कंपनी की कमाई क्षमता जानना चाहता है, तो उसे किस प्रकार के अनुपात पर ध्यान देना चाहिए?
उत्तर – लाभप्रदता अनुपात

» तरलता अनुपात: चालू अनुपात

प्रश्न 21 (आसान). यदि चालू परिसंपत्तियाँ ₹2,00,000 और चालू दायित्व ₹1,00,000 हैं, तो चालू अनुपात क्या होगा?
उत्तर – 2:1

प्रश्न 22 (आसान). चालू परिसंपत्तियों के दो उदाहरण दीजिए।
उत्तर – स्टॉक, रोकड़

प्रश्न 23 (मध्यम). कंपनी A के पास ₹1,50,000 का स्टॉक, ₹50,000 के देनदार और ₹30,000 का बैंक बैलेंस है। उसके लेनदार ₹80,000 और देय विपत्र ₹20,000 हैं। चालू अनुपात निकालें।

उत्तर – 2.3:1

प्रश्न 24 (कठिन). एक कंपनी का चालू अनुपात 2.5:1 है। उसकी चालू परिसंपत्तियाँ ₹5,00,000 हैं। यदि उसने ₹50,000 के स्टॉक को क्रेडिट पर बेचा, तो नया चालू अनुपात क्या होगा?

उत्तर – नया चालू अनुपात 2.6:1 होगा। (चालू दायित्व ₹2,00,000; स्टॉक बेचने से देनदार बढ़ेंगे, स्टॉक घटेगा, कुल चालू परिसंपत्तियाँ वही रहेंगी; 5,00,000 / 2,00,000 = 2.5:1)

» तरलता अनुपात: तरल अनुपात (क्विक रेश्यो)

प्रश्न 25 (आसान). यदि तरल परिसंपत्तियाँ ₹90,000 और चालू दायित्व ₹60,000 हैं, तो तरल अनुपात क्या होगा?

उत्तर – 1.5:1

प्रश्न 26 (आसान). तरल अनुपात का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर – अम्ल जाँच अनुपात (Acid Test Ratio)

प्रश्न 27 (मध्यम). एक कंपनी की चालू परिसंपत्तियाँ ₹2,00,000 हैं, जिसमें ₹50,000 का स्टॉक और ₹5,000 के पूर्वदत्त व्यय शामिल हैं। यदि चालू दायित्व ₹1,00,000 हैं, तो तरल अनुपात ज्ञात कीजिए।

उत्तर – 1.45:1

प्रश्न 28 (कठिन). चालू अनुपात 3:1 है और तरल अनुपात 2:1 है। यदि स्टॉक ₹45,000 है, तो चालू परिसंपत्तियाँ और चालू दायित्व ज्ञात कीजिए। (संकेत: चालू परिसंपत्तियाँ - तरल परिसंपत्तियाँ = स्टॉक)

उत्तर – चालू दायित्व = ₹45,000; चालू परिसंपत्तियाँ = ₹1,35,000

» ऋण शोधन क्षमता अनुपात: ऋण-समता अनुपात

प्रश्न 29 (आसान). यदि दीर्घकालिक ऋण ₹6,00,000 है और शेयरधारकों की निधि ₹3,00,000 है, तो ऋण-समता अनुपात क्या होगा?

उत्तर – 2:1

प्रश्न 30 (आसान). ऋण-समता अनुपात 1:1 का क्या अर्थ है?

उत्तर – इसका अर्थ है कि कंपनी के पास जितना दीर्घकालिक ऋण है, उतनी ही उसकी अपनी निधि (equity) भी है।

प्रश्न 31 (मध्यम). एक कंपनी का ऋण-समता अनुपात 0.5:1 है। क्या यह कंपनी के लिए अच्छी स्थिति है? क्यों?

उत्तर – हाँ, यह एक अच्छी स्थिति है क्योंकि इसका मतलब है कि कंपनी ने अपने स्वयं के धन (equity) का अधिक उपयोग किया है और दीर्घकालिक ऋण कम लिया है, जिससे वित्तीय जोखिम कम होता है।

प्रश्न 32 (कठिन). यदि कंपनी की कुल संपत्ति ₹10,00,000 है और कुल दीर्घकालिक ऋण ₹4,00,000 है, तथा चालू देनदारियाँ ₹1,00,000 हैं, तो ऋण-समता अनुपात की गणना करें।

उत्तर – शेयरधारकों की निधि (Equity) = कुल संपत्ति - कुल देनदारियां (दीर्घकालिक ऋण + चालू देनदारियां) = ₹10,00,000 - (₹4,00,000 + ₹1,00,000) = ₹5,00,000। ऋण-समता अनुपात = ₹4,00,000 / ₹5,00,000 = 0.8:1

» ऋण शोधन क्षमता अनुपात: ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात और स्वामित्व अनुपात

प्रश्न 33 (आसान). अगर दीर्घकालिक ऋण ₹3,00,000 और नियोजित पूँजी ₹10,00,000 है, तो ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात क्या होगा?

उत्तर – 0.3:1

प्रश्न 34 (आसान). यदि अंशधारक निधि ₹7,00,000 और नियोजित पूँजी ₹10,00,000 है, तो स्वामित्व अनुपात क्या है?
उत्तर – 0.7:1

प्रश्न 35 (मध्यम). एक कंपनी का दीर्घकालिक ऋण ₹6,00,000 है, अंशधारक निधि ₹18,00,000 है, और चालू दायित्व ₹3,00,000 हैं। नियोजित पूँजी की गणना करें और फिर 'ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात' निकालें।
उत्तर – नियोजित पूँजी = 6,00,000 + 18,00,000 = 24,00,000; ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात = 6,00,000 / 24,00,000 = 0.25:1

प्रश्न 36 (कठिन). कुल परिसंपत्तियाँ ₹30,00,000 हैं, चालू दायित्व ₹5,00,000 हैं, और दीर्घकालिक ऋण ₹7,50,000 है। 'स्वामित्व अनुपात' ज्ञात करें।
उत्तर – नियोजित पूँजी = कुल परिसंपत्तियाँ - चालू दायित्व = 30,00,000 - 5,00,000 = 25,00,000; अंशधारक निधि = नियोजित पूँजी - दीर्घकालिक ऋण = 25,00,000 - 7,50,000 = 17,50,000; स्वामित्व अनुपात = 17,50,000 / 25,00,000 = 0.7:1

» ऋण शोधन क्षमता अनुपात: कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात और ब्याज व्याप्ति अनुपात

प्रश्न 37 (आसान). यदि कुल परिसंपत्तियाँ ₹5,00,000 हैं और दीर्घकालिक ऋण ₹1,00,000 है, तो कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात क्या होगा?
उत्तर – 5:1

प्रश्न 38 (आसान). अगर ब्याज व कर से पूर्व निवल लाभ ₹2,00,000 है और दीर्घकालिक ऋणों पर ब्याज ₹50,000 है, तो ब्याज व्याप्ति अनुपात कितना होगा?
उत्तर – 4 गुना

प्रश्न 39 (मध्यम). एक कंपनी का कर के बाद लाभ ₹1,50,000 है। कर दर 25% है। दीर्घकालिक ऋण पर कुल ब्याज ₹80,000 है। ब्याज व्याप्ति अनुपात ज्ञात करें।
उत्तर – 3 गुना

प्रश्न 40 (कठिन). Y लिमिटेड के पास ₹10,00,000 की कुल परिसंपत्तियाँ हैं। दीर्घकालिक ऋण ₹4,00,000 है जिस पर 12% ब्याज दर है। कंपनी का कर (30%) के बाद का लाभ ₹1,75,000 है। दोनों अनुपातों की गणना करें।
उत्तर – कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात = 2.5:1, ब्याज व्याप्ति अनुपात = 4.09 गुना (लगभग)

» क्रियाशीलता (या आवर्त) अनुपात: रहतिया आवर्त अनुपात

प्रश्न 41 (आसान). यदि प्रचालन से आगम की लागत ₹2,00,000 है और औसत रहतिया ₹40,000 है, तो रहतिया आवर्त अनुपात क्या होगा?
उत्तर – 5 गुना

प्रश्न 42 (आसान). प्रारंभिक रहतिया ₹10,000 और अंतिम रहतिया ₹20,000 है। औसत रहतिया क्या है?
उत्तर – ₹15,000

प्रश्न 43 (मध्यम). प्रारंभिक रहतिया ₹30,000, अंतिम रहतिया ₹50,000, और प्रचालन से आगम की लागत ₹2,40,000 है। रहतिया आवर्त अनुपात ज्ञात करें।
उत्तर – 6 गुना

प्रश्न 44 (कठिन). प्रचालन से आगम ₹5,00,000 है, सकल लाभ अनुपात 20% है (प्रचालन से आगम पर), और औसत रहतिया ₹80,000 है। रहतिया आवर्त अनुपात ज्ञात करें।
उत्तर – 5 गुना (पहले प्रचालन से आगम की लागत = 5,00,000 - (5,00,000 का 20%) = 4,00,000 निकालेंगे)

» क्रियाशीलता (या आवर्त) अनुपात: व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात और व्यापारिक देय आवर्त अनुपात

प्रश्न 45 (आसान). यदि शुद्ध उधार क्रय ₹6,00,000 है और औसत व्यापारिक देय ₹2,00,000 है, तो व्यापारिक देय आवर्त अनुपात क्या होगा?

उत्तर – 3 गुना

प्रश्न 46 (आसान). व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात क्या मापता है?

उत्तर – फर्म द्वारा ग्राहकों से उधार वसूली की गति।

प्रश्न 47 (मध्यम). एक कंपनी का कुल आगम ₹10,00,000 है, नकद आगम ₹2,00,000 है। प्रारंभिक व्यापारिक प्राप्य ₹1,00,000 और अंतिम व्यापारिक प्राप्य ₹3,00,000 हैं। व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात ज्ञात करें।

उत्तर – 4 गुना (शुद्ध उधार आगम = 10L - 2L = 8L; औसत प्राप्य = (1L+3L)/2 = 2L; 8L/2L = 4)

प्रश्न 48 (कठिन). यदि व्यापारिक देय आवर्त अनुपात 5 गुना है और वर्ष में 365 दिन हैं, तो औसत भुगतान अवधि कितने दिन होगी?

उत्तर – 73 दिन (365 / 5)

» क्रियाशीलता (या आवर्त) अनुपात: निवल परिसंपत्तियां (नियोजित पूँजी) आवर्त अनुपात, स्थायी परिसंपत्ति आवर्त अनुपात, और कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात

प्रश्न 49 (आसान). यदि प्रचालन से आगम ₹5,00,000 है और विनियोजित पूँजी ₹2,50,000 है, तो निवल परिसंपत्तियां आवर्त अनुपात क्या होगा?

उत्तर – 2 गुना

प्रश्न 50 (आसान). प्रचालन से आगम ₹10,00,000 और निवल स्थायी परिसंपत्तियां ₹4,00,000 हैं। स्थायी परिसंपत्ति आवर्त अनुपात ज्ञात करें।

उत्तर – 2.5 गुना

प्रश्न 51 (मध्यम). एक कंपनी की बिक्री ₹12,00,000 है। उसकी चालू परिसंपत्तियां ₹3,00,000 और चालू दायित्व ₹1,00,000 हैं। कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात निकालें।

उत्तर – 6 गुना (कार्यशील पूँजी = 3,00,000 - 1,00,000 = 2,00,000; अनुपात = 12,00,000 / 2,00,000)

प्रश्न 52 (कठिन). एक कंपनी के पास शेयर पूँजी ₹8,00,000, दीर्घकालिक ऋण ₹4,00,000, और प्रचालन से निवल आगम ₹24,00,000 है। निवल परिसंपत्तियां (नियोजित पूँजी) आवर्त अनुपात क्या होगा?

उत्तर – 2 गुना (विनियोजित पूँजी = 8,00,000 + 4,00,000 = 12,00,000; अनुपात = 24,00,000 / 12,00,000)

» लाभप्रदता अनुपात: सकल लाभ अनुपात, प्रचालन अनुपात, और प्रचालन लाभ अनुपात

प्रश्न 53 (आसान). यदि सकल लाभ 60,000 रु. और प्रचालन से आगम 3,00,000 रु. है, तो सकल लाभ अनुपात क्या होगा?

उत्तर – 20%

प्रश्न 54 (आसान). प्रचालन से आगम की लागत 1,50,000 रु., प्रचालन व्यय 50,000 रु., और प्रचालन से आगम 2,50,000 रु. हो, तो प्रचालन अनुपात की गणना करें।

उत्तर – 80%

प्रश्न 55 (मध्यम). निम्नलिखित से सकल लाभ अनुपात और प्रचालन लाभ अनुपात निकालें:

प्रचालन से आगम = 4,00,000 रु.

प्रचालन से आगम की लागत = 2,40,000 रु.

कार्यालय और प्रशासनिक व्यय = 60,000 रु.

उत्तर – सकल लाभ अनुपात = 40%, प्रचालन लाभ अनुपात = 25%

प्रश्न 56 (कठिन). एक कंपनी की कुल बिक्री 6,00,000 रु. है, जिसमें से नकद बिक्री 1,00,000 रु. है। क्रय 4,00,000 रु. है, और इसमें 20,000 रु. की आवक ढुलाई शामिल है। विक्रय व्यय 30,000 रु. और प्रशासनिक व्यय 20,000 रु. हैं। प्रारंभिक रहतिया 50,000 रु. और अंतिम रहतिया 30,000 रु. है। सकल लाभ अनुपात, प्रचालन अनुपात, और प्रचालन लाभ अनुपात ज्ञात करें।

उत्तर – सकल लाभ अनुपात = 26.67%, प्रचालन अनुपात = 78.33%, प्रचालन लाभ अनुपात = 21.67%

» लाभप्रदता अनुपात: निवल लाभ अनुपात और नियोजित पूँजी पर प्रत्याय (ROCE)

प्रश्न 57 (आसान). यदि प्रचालन से आगम 5,00,000 रुपये और निवल लाभ 1,00,000 रुपये है, तो निवल लाभ अनुपात क्या होगा?

उत्तर – 20%

प्रश्न 58 (आसान). यदि नियोजित पूँजी 10,00,000 रुपये है और ब्याज और कर से पूर्व लाभ 2,00,000 रुपये है, तो ROCE क्या होगा?

उत्तर – 20%

प्रश्न 59 (मध्यम). बिक्री 8,00,000 रुपये, सकल लाभ 2,40,000 रुपये, अप्रत्यक्ष व्यय 40,000 रुपये। कर की दर 25% है। निवल लाभ अनुपात ज्ञात करें।

उत्तर – 18.75%

प्रश्न 60 (कठिन). एक कंपनी की इक्विटी शेयर कैपिटल 5,00,000 रुपये, 10% डिबेंचर 3,00,000 रुपये, और रिजर्व 2,00,000 रुपये हैं। ब्याज और कर से पूर्व लाभ 2,50,000 रुपये है। ROCE की गणना करें।

उत्तर – 25%

» लाभप्रदता अनुपात: अंशधरक निधि पर प्रत्याय, प्रति अंश अर्जन (EPS), और प्रति अंश पुस्तक मूल्य

प्रश्न 61 (आसान). अगर कर के पश्चात् लाभ 10,00,000 रुपये और अंशधरक निधि 50,00,000 रुपये है, तो अंशधरक निधि पर प्रत्याय क्या होगा?

उत्तर – 20%

प्रश्न 62 (आसान). समता अंशधरकों के लिए लाभ 2,50,000 रुपये और समता अंशों की संख्या 50,000 है। EPS कितना होगा?

उत्तर – 5 रुपये प्रति अंश

प्रश्न 63 (मध्यम). एक कंपनी का कर के पश्चात् लाभ 7,50,000 रुपये, कुल अंशधरक निधि 30,00,000 रुपये, और समता अंशों की संख्या 1,50,000 है। यदि समता अंशधरकों के लिए लाभ 6,00,000 रुपये है, तो तीनों अनुपात (RONW, EPS, बुक वैल्यू) ज्ञात करें।

उत्तर – RONW: 25%, EPS: 4 रुपये, बुक वैल्यू: 20 रुपये

प्रश्न 64 (कठिन). एक कंपनी की इक्विटी शेयर पूंजी 10,00,000 रुपये (10 रुपये प्रति शेयर), रिजर्व और सरप्लस 5,00,000 रुपये, कर के पश्चात् लाभ 6,00,000 रुपये है। यदि कंपनी ने 1,00,000 रुपये का प्रेफरेंस लाभांश दिया है, तो RONW और EPS ज्ञात करें।

उत्तर – अंशधरक निधि = 10,00,000 + 5,00,000 = 15,00,000 रुपये। RONW = (6,00,000 / 15,00,000) * 100 = 40%। समता अंशधरकों के लिए लाभ = 6,00,000 - 1,00,000 = 5,00,000 रुपये। समता अंशों की संख्या = 1,00,000। EPS = 5,00,000 / 1,00,000 = 5 रुपये प्रति अंश।

» लाभप्रदता अनुपात: लाभांश भुगतान अनुपात और मूल्य अर्जन अनुपात (P/E Ratio)

प्रश्न 65 (आसान). यदि एक कंपनी ₹20 प्रति शेयर कमाती है और ₹5 लाभांश देती है, तो लाभांश भुगतान अनुपात क्या होगा?

उत्तर – 25%

प्रश्न 66 (आसान). एक शेयर का बाज़ार मूल्य ₹200 है और प्रति अंश अर्जन ₹25 है। P/E Ratio क्या है?

उत्तर – 8 गुना

प्रश्न 67 (मध्यम). अगर लाभांश भुगतान अनुपात 30% है और प्रति अंश अर्जन ₹30 है, तो प्रति अंश लाभांश कितना होगा?

उत्तर – ₹9

प्रश्न 68 (कठिन). एक कंपनी का प्रति अंश बाज़ार मूल्य ₹500 है और उसका P/E Ratio 20 गुना है। कंपनी का प्रति अंश अर्जन (EPS) ज्ञात कीजिए।

उत्तर – ₹25

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. एक कंपनी की कुल बिक्री (Sales) 5,00,000 रुपये है और उसका सकल लाभ (Gross Profit) 1,25,000 रुपये है। सकल लाभ अनुपात ज्ञात कीजिए।

› पहले हमें देखना है कि हमें किन दो संख्याओं के बीच संबंध निकालना है - सकल लाभ और बिक्री।

› सकल लाभ अनुपात निकालने का सूत्र है: (सकल लाभ / कुल बिक्री) * 100

› संख्याओं को सूत्र में रखेंगे: (1,25,000 रुपये / 5,00,000 रुपये) * 100

› गणना करेंगे: 0.25 * 100

› परिणाम आएगा: 25%

उत्तर – सकल लाभ अनुपात 25% है।

उदाहरण 2. मान लीजिए एक कंपनी ने इस साल ₹5,00,000 का शुद्ध लाभ कमाया और उसकी कुल बिक्री ₹20,00,000 थी। अनुपात विश्लेषण का उपयोग करके 'लाभप्रदता' का आकलन कैसे करेंगे?

› पहला कदम, हम 'सकल लाभ अनुपात' (Gross Profit Ratio) निकालेंगे।

› सकल लाभ अनुपात = (शुद्ध लाभ / कुल बिक्री) × 100

› अब संख्याएं डालते हैं: (₹5,00,000 / ₹20,00,000) × 100

› गणना करने पर आता है: 0.25 × 100 = 25%

› इस अनुपात का मतलब है कि कंपनी अपनी हर ₹100 की बिक्री पर ₹25 का लाभ कमा रही है।

उत्तर – कंपनी का सकल लाभ अनुपात 25% है। यह हमें कंपनी की लाभ कमाने की क्षमता के बारे में बताता है।

उदाहरण 3. मान लीजिए एक कंपनी ने पिछले साल 10 लाख रुपये की बिक्री पर 1 लाख रुपये का शुद्ध लाभ कमाया और इस साल 12 लाख की बिक्री पर 90 हज़ार का शुद्ध लाभ कमाया। अनुपात विश्लेषण से इसके लाभप्रदता (profitability) को समझाइए।

› पहला कदम: पिछले साल का शुद्ध लाभ अनुपात निकालो। शुद्ध लाभ / बिक्री = 1,00,000 / 10,00,000 = 0.10 या 10%.

› दूसरा कदम: इस साल का शुद्ध लाभ अनुपात निकालो। शुद्ध लाभ / बिक्री = 90,000 / 12,00,000 = 0.075 या 7.5%.

› तीसरा कदम: तुलना करो। पिछले साल 10% लाभ था, इस साल 7.5% है।

› चौथा कदम: निष्कर्ष। अनुपात विश्लेषण से साफ दिख रहा है कि भले ही बिक्री बढ़ी है, लेकिन लाभ कमाने की क्षमता (profitability) कम हो गई है। यह एक समस्या का क्षेत्र है जिस पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

उत्तर – अनुपात विश्लेषण दर्शाता है कि कंपनी की बिक्री बढ़ने के बावजूद, उसकी लाभ कमाने की क्षमता पिछले वर्ष की तुलना में कम हुई है (10% से 7.5%), जो प्रबंधन के लिए एक चिंता का विषय है।

उदाहरण 4. एक कंपनी ने अपनी Balance Sheet में संपत्तियों को उनकी पुरानी लागत पर दिखाया है, जबकि बाज़ार में उनकी कीमत बहुत बढ़ गई है। क्या अनुपात विश्लेषण से सही तस्वीर दिखेगी?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि वित्तीय विवरण (financial statements) पुराने डेटा पर आधारित होते हैं, खासकर संपत्ति के मूल्य के मामले में।

› दूसरा कदम: जब अनुपात निकाले जाते हैं, तो वे इन्हीं पुराने मूल्यों का उपयोग करते हैं।

› तीसरा कदम: अगर संपत्तियों का बाज़ार मूल्य (market value) बहुत ज़्यादा बढ़ गया है और लेखांकन में वह नहीं दिखाया गया, तो जो अनुपात निकलेंगे, वे कंपनी की वास्तविक स्थिति को पूरी तरह से नहीं दर्शाएँगे।

› चौथा कदम: उदाहरण के लिए, रिटर्न ऑन एसेट्स (Return on Assets) का अनुपात कम दिख सकता है क्योंकि एसेट्स का मूल्य कम करके दिखाया गया है।

› निष्कर्ष: इस कारण से, अनुपात विश्लेषण कंपनी की संपत्तियों के वास्तविक मूल्य को नज़रअंदाज़ करने के कारण पूरी तरह से सटीक नहीं होगा।

उत्तर – नहीं, अनुपात विश्लेषण से कंपनी की वास्तविक वित्तीय स्थिति की पूरी और सही तस्वीर नहीं दिखेगी, क्योंकि लेखांकन आँकड़ों में मूल्य स्तर में बदलावों की उपेक्षा की गई है।

उदाहरण 5. मान लीजिए एक कंपनी को ₹50,000 के छोटे कर्ज़ चुकाने हैं और उसके पास तुरंत के लिए ₹60,000 नकद हैं। यह किस प्रकार के अनुपात से संबंधित है?

› पहचानो कि कर्ज़ 'छोटे' हैं, मतलब अल्पकालिक.

› पहचानो कि 'तुरंत नकद' उपलब्ध है, मतलब तरलता की बात हो रही है.

› अल्पकालिक देनदारियों को चुकाने की क्षमता 'तरलता अनुपात' से मापी जाती है.

उत्तर – यह 'तरलता अनुपात' से संबंधित है, क्योंकि यह कंपनी की अल्पकालिक देनदारियों को पूरा करने की क्षमता को दर्शाता है।

उदाहरण 6. एक कंपनी के पास निम्नलिखित जानकारी है: स्टॉक ₹70,000, देनदार ₹30,000, रोकड़ ₹20,000, लेनदार ₹60,000, देय विपत्र ₹40,000। चालू अनुपात की गणना कीजिए।

› सबसे पहले, हम चालू परिसंपत्तियों को जोड़ेंगे: स्टॉक + देनदार + रोकड़ = ₹70,000 + ₹30,000 + ₹20,000 = ₹1,20,000।

› अब, हम चालू दायित्वों को जोड़ेंगे: लेनदार + देय विपत्र = ₹60,000 + ₹40,000 = ₹1,00,000।

› अंत में, हम चालू अनुपात का सूत्र लगाएंगे: चालू अनुपात = चालू परिसंपत्तियाँ / चालू दायित्व।

› यानी ₹1,20,000 / ₹1,00,000 = 1.2 : 1।

उत्तर – चालू अनुपात = 1.2 : 1

उदाहरण 7. एक कंपनी की चालू परिसंपत्तियाँ ₹1,50,000 हैं, जिसमें ₹60,000 का अंतिम स्टॉक और ₹10,000 के पूर्वदत्त व्यय शामिल हैं। चालू दायित्व ₹70,000 हैं। तरल अनुपात ज्ञात कीजिए।

› सबसे पहले, हमें तरल परिसंपत्तियाँ (Liquid Assets) ज्ञात करनी होंगी।

› तरल परिसंपत्तियाँ = चालू परिसंपत्तियाँ - (अंतिम स्टॉक + पूर्वदत्त व्यय)

› तरल परिसंपत्तियाँ = ₹1,50,000 - (₹60,000 + ₹10,000)

› तरल परिसंपत्तियाँ = ₹1,50,000 - ₹70,000 = ₹80,000

› अब, तरल अनुपात के सूत्र का उपयोग करेंगे:

› तरल अनुपात = तरल परिसंपत्तियाँ / चालू दायित्व

› तरल अनुपात = ₹80,000 / ₹70,000

उत्तर – तरल अनुपात = 1.14 : 1 (लगभग)

उदाहरण 8. एक कंपनी का कुल दीर्घकालिक ऋण ₹5,00,000 है और शेयरधारकों की निधि (Equity) ₹2,00,000 है। ऋण-समता अनुपात की गणना करें।

› हमें ऋण-समता अनुपात का सूत्र याद है: (दीर्घकालिक ऋण) / (शेयरधारकों की निधि)

› दीर्घकालिक ऋण (Long-term Debts) = ₹5,00,000

› शेयरधारकों की निधि (Equity) = ₹2,00,000

› अनुपात = ₹5,00,000 / ₹2,00,000

› अनुपात = 2.5 : 1

उत्तर – ऋण-समता अनुपात = 2.5 : 1

उदाहरण 9. एक कंपनी के पास दीर्घकालिक ऋण ₹5,00,000 है, अंशधारक निधि ₹15,00,000 है, और चालू दायित्व ₹2,00,000 हैं। नियोजित पूँजी और कुल परिसंपत्तियाँ ₹20,00,000 हैं। 'ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात' और 'स्वामित्व अनुपात' की गणना करें।

› पहले हम 'ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात' निकालेंगे। इसका सूत्र है: दीर्घकालिक ऋण / नियोजित पूँजी।

› दीर्घकालिक ऋण = ₹5,00,000

› नियोजित पूँजी = ₹20,00,000

› ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात = 5,00,000 / 20,00,000 = 0.25:1

› अब हम 'स्वामित्व अनुपात' निकालेंगे। इसका सूत्र है: अंशधारक निधि / नियोजित पूँजी।

› अंशधारक निधि = ₹15,00,000

› नियोजित पूँजी = ₹20,00,000

› स्वामित्व अनुपात = 15,00,000 / 20,00,000 = 0.75:1

उत्तर – ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात = 0.25:1; स्वामित्व अनुपात = 0.75:1

उदाहरण 10. एक्स लिमिटेड का कुल लाभ (कर के बाद) ₹90,000 है। दीर्घकालिक ऋण ₹12,00,000 है जिस पर 10% ब्याज लगता है। कंपनी की कुल परिसंपत्तियाँ ₹20,00,000 हैं। कर की दर 30% है। 'कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात' और 'ब्याज व्याप्ति अनुपात' ज्ञात कीजिए।

› पहले हम 'कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात' निकालेंगे। इसका सूत्र है: कुल परिसंपत्तियाँ / दीर्घकालिक ऋण। हमें कुल परिसंपत्तियाँ दी गई हैं ₹20,00,000 और दीर्घकालिक ऋण ₹12,00,000।

› अनुपात होगा: 20,00,000 / 12,00,000 = 1.67:1।

› अब, 'ब्याज व्याप्ति अनुपात' निकालने के लिए, हमें 'ब्याज व कर देने से पूर्व निवल लाभ' चाहिए।

› दीर्घकालिक ऋण पर ब्याज: 10% का ₹12,00,000 = ₹1,20,000।

› कर के बाद लाभ ₹90,000 है और कर दर 30% है।

› कर से पूर्व लाभ = कर के बाद लाभ × 100 / (100 - कर दर) = 90,000 × 100 / (100 - 30) = 90,000 × 100 / 70 = ₹1,28,571.43 (लगभग)।

› ब्याज व कर देने से पूर्व निवल लाभ = कर से पूर्व लाभ + ब्याज = 1,28,571.43 + 1,20,000 = ₹2,48,571.43।

› ब्याज व्याप्ति अनुपात = ब्याज व कर देने से पूर्व निवल लाभ / दीर्घकालिक ऋणों पर ब्याज = 2,48,571.43 / 1,20,000 = 2.07 गुना (लगभग)।

उत्तर – कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात = 1.67:1, ब्याज व्याप्ति अनुपात = 2.07 गुना।

उदाहरण 11. एक कंपनी का प्रारंभिक रहतिया ₹20,000, अंतिम रहतिया ₹30,000, और प्रचालन से आगम की लागत ₹1,50,000 है। रहतिया आवर्त अनुपात ज्ञात करें।

› सबसे पहले, हम औसत रहतिया निकालेंगे: (प्रारंभिक रहतिया + अंतिम रहतिया) / 2

› तो, औसत रहतिया = (₹20,000 + ₹30,000) / 2 = ₹50,000 / 2 = ₹25,000

› अब, रहतिया आवर्त अनुपात के सूत्र में मान रखेंगे: प्रचालन से आगम की लागत / औसत रहतिया

› रहतिया आवर्त अनुपात = ₹1,50,000 / ₹25,000

उत्तर – रहतिया आवर्त अनुपात = 6 गुना (6 times)

उदाहरण 12. एक कंपनी का शुद्ध उधार आगम ₹5,00,000 है। प्रारंभिक व्यापारिक प्राप्य ₹80,000 और अंतिम व्यापारिक प्राप्य ₹1,20,000 हैं। व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात ज्ञात करें।

› सबसे पहले, औसत व्यापारिक प्राप्य निकालेंगे: (प्रारंभिक व्यापारिक प्राप्य + अंतिम व्यापारिक प्राप्य) / 2

› औसत व्यापारिक प्राप्य = (₹80,000 + ₹1,20,000) / 2 = ₹2,00,000 / 2 = ₹1,00,000

› अब, व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात का सूत्र लगाएंगे: शुद्ध उधार आगम / औसत व्यापारिक प्राप्य

› व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात = ₹5,00,000 / ₹1,00,000

उत्तर – 5 गुना

उदाहरण 13. मान लीजिए एक कंपनी की प्रचालन से आगम (बिक्री) ₹30,00,000 है। उसकी विनियोजित पूँजी ₹18,00,000, निवल स्थायी परिसंपत्तियाँ ₹16,00,000 और कार्यशील पूँजी ₹2,00,000 है। हमें तीनों आवर्त अनुपात ज्ञात करने हैं।

› सबसे पहले, निवल परिसंपत्तियां (नियोजित पूँजी) आवर्त अनुपात निकालते हैं: प्रचालन से निवल आगम को विनियोजित पूँजी से भाग देंगे। तो, 30,00,000 / 18,00,000 = 1.67 गुना।

› फिर, स्थायी परिसंपत्ति आवर्त अनुपात के लिए: प्रचालन से निवल आगम को निवल स्थायी परिसंपत्तियों से भाग देंगे। मतलब, 30,00,000 / 16,00,000 = 1.88 गुना।

› और आखिर में, कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात के लिए: प्रचालन से निवल आगम को कार्यशील पूँजी से भाग देंगे। यानि, 30,00,000 / 2,00,000 = 15 गुना।

उत्तर – निवल परिसंपत्तियां आवर्त अनुपात = 1.67 गुना, स्थायी परिसंपत्ति आवर्त अनुपात = 1.88 गुना, कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात = 15 गुना।

उदाहरण 14. नीचे दी गई जानकारी से सकल लाभ अनुपात, प्रचालन अनुपात और प्रचालन लाभ अनुपात की गणना करें:

प्रचालन से आगम = 5,00,000 रु.

प्रचालन से आगम की लागत = 3,00,000 रु.

प्रचालन व्यय = 1,00,000 रु.

› पहले सकल लाभ निकालेंगे: सकल लाभ = प्रचालन से आगम - प्रचालन से आगम की लागत

› = 5,00,000 रु. - 3,00,000 रु. = 2,00,000 रु.

› अब सकल लाभ अनुपात: = (सकल लाभ / प्रचालन से निवल आगम) × 100

› = (2,00,000 रु. / 5,00,000 रु.) × 100 = 40%

› फिर प्रचालन लागत निकालेंगे: प्रचालन लागत = प्रचालन से आगम की लागत + प्रचालन व्यय

› = 3,00,000 रु. + 1,00,000 रु. = 4,00,000 रु.

› अब प्रचालन अनुपात: = (प्रचालन लागत / प्रचालन से निवल आगम) × 100

› = (4,00,000 रु. / 5,00,000 रु.) × 100 = 80%

› आखिर में प्रचालन लाभ निकालेंगे: प्रचालन लाभ = प्रचालन से आगम - प्रचालन लागत

› = 5,00,000 रु. - 4,00,000 रु. = 1,00,000 रु.

› और प्रचालन लाभ अनुपात: = (प्रचालन लाभ / प्रचालन से निवल आगम) × 100

› = (1,00,000 रु. / 5,00,000 रु.) × 100 = 20%

उत्तर – सकल लाभ अनुपात = 40%, प्रचालन अनुपात = 80%, प्रचालन लाभ अनुपात = 20%

उदाहरण 15. एक कंपनी का प्रचालन से आगम (बिक्री) 10,00,000 रुपये है। उसका सकल लाभ अनुपात 30% है। कंपनी के अप्रत्यक्ष व्यय (अदर इनडाइरेक्ट एक्सपेंस) 50,000 रुपये हैं और कर की दर 30% है। निवल लाभ अनुपात की गणना करें।

› पहले सकल लाभ निकालो: प्रचालन से आगम का 30% = 10,00,000 * 30/100 = 3,00,000 रुपये।

› प्रचालन लाभ (ऑपरेटिंग प्रॉफिट) = सकल लाभ - अप्रत्यक्ष व्यय = 3,00,000 - 50,000 = 2,50,000 रुपये।

› ब्याज और कर से पूर्व लाभ (PBIT) भी 2,50,000 रुपये है क्योंकि इस उदाहरण में ब्याज नहीं दिया गया।

› अब कर घटाओ: कर = 2,50,000 का 30% = 75,000 रुपये।

› कर के पश्चात् लाभ (PAT) या निवल लाभ = 2,50,000 - 75,000 = 1,75,000 रुपये।

› निवल लाभ अनुपात = (निवल लाभ / प्रचालन से आगम) × 100 = (1,75,000 / 10,00,000) × 100।

उत्तर – निवल लाभ अनुपात = 17.5%

उदाहरण 16. एक कंपनी का कर के पश्चात् लाभ (Profit After Tax) 5,00,000 रुपये है। कुल अंशधरक निधि (Total Shareholder's Fund) 20,00,000 रुपये है। कंपनी के पास 2,00,000 समता अंश हैं। समता अंशधरकों के लिए उपलब्ध लाभ (Profit available for Equity Shareholders) 4,00,000 रुपये है। 'अंशधरक निधि पर प्रत्याय', 'प्रति अंश अर्जन (EPS)' और 'प्रति अंश पुस्तक मूल्य' ज्ञात करें।

› पहले 'अंशधरक निधि पर प्रत्याय' निकालते हैं: सूत्र है (कर के पश्चात् लाभ / अंशधरक निधि) × 100. तो, (5,00,000 / 20,00,000) × 100 = 25%.

› अब 'प्रति अंश अर्जन (EPS)' निकालते हैं: सूत्र है (समता अंशधरकों के लिए उपलब्ध लाभ / समता अंशों की संख्या). तो, (4,00,000 / 2,00,000) = 2 रुपये प्रति अंश.

› अंत में, 'प्रति अंश पुस्तक मूल्य' निकालते हैं: सूत्र है (समता अंशधरक निधि / समता अंशों की संख्या). यहाँ समता अंशधरक निधि 20,00,000 रुपये है और प्रेफरेंस शेयर कैपिटल नहीं है, इसलिए यही समता अंशधरक निधि मानी जाएगी। तो, (20,00,000 / 2,00,000) = 10 रुपये प्रति अंश.

उत्तर – अंशधरक निधि पर प्रत्याय: 25%, प्रति अंश अर्जन (EPS): 2 रुपये, प्रति अंश पुस्तक मूल्य: 10 रुपये।

उदाहरण 17. एक कंपनी का प्रति अंश अर्जन (EPS) ₹15 है। यदि कंपनी प्रति अंश ₹6 का लाभांश घोषित करती है, और शेयर का बाज़ार मूल्य ₹120 है, तो लाभांश भुगतान अनुपात और मूल्य अर्जन अनुपात (P/E Ratio) ज्ञात कीजिए।

› पहले लाभांश भुगतान अनुपात निकालेंगे: सूत्र है (प्रति अंश लाभांश / प्रति अंश अर्जन) * 100।

› यहाँ प्रति अंश लाभांश ₹6 है और प्रति अंश अर्जन ₹15 है।

› तो, लाभांश भुगतान अनुपात = (6 / 15) * 100 = 0.4 * 100 = 40%

› अब मूल्य अर्जन अनुपात (P/E Ratio) निकालेंगे: सूत्र है प्रति अंश बाज़ार मूल्य / प्रति अंश अर्जन।

› यहाँ प्रति अंश बाज़ार मूल्य ₹120 है और प्रति अंश अर्जन ₹15 है।

› तो, मूल्य अर्जन अनुपात = 120 / 15 = 8 गुना।

उत्तर – लाभांश भुगतान अनुपात = 40%, मूल्य अर्जन अनुपात = 8 गुना।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पूरे अध्याय का आधार है। अक्सर 'लेखांकन अनुपात का अर्थ' पर सीधा प्रश्न आता है, या फिर यह बड़े प्रश्नों में एक हिस्से के रूप में पूछा जाता है।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अनुपात विश्लेषण के लाभों को बिंदुओं में याद करें और हर बिंदु को एक-दो लाइन में उदाहरण के साथ समझाना सीखें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अनुपात विश्लेषण की सीमाओं को पॉइंट्स में याद रखें और हर पॉइंट का एक छोटा उदाहरण भी तैयार कर लें। इससे पूरे अंक मिलेंगे।

• इन चारों प्रकार के अनुपातों के नाम और उनके मुख्य उद्देश्य बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी हैं, सीधे प्रश्न आते हैं।

• यह अनुपात बोर्ड परीक्षाओं में गणना वाले प्रश्नों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही, इसके आदर्श स्तर और इसके महत्व पर छोटे थ्योरी प्रश्न भी आ सकते हैं, इसलिए इसे अच्छे से समझ लेना।

• यह अनुपात बोर्ड परीक्षाओं में छोटे सवालों और बड़े सवालों में गणना के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसका सूत्र और 'तरल परिसंपत्तियाँ' कैसे निकालते हैं, इसे अच्छे से याद कर लेना।

• यह अनुपात बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आपको इसका सूत्र याद होना चाहिए और यह भी पता होना चाहिए कि 'दीर्घकालिक ऋण' और 'शेयरधारकों की निधि' में क्या-क्या शामिल होता है। अक्सर, घुमा फिराकर आंकड़े दिए जाते हैं, आपको सही घटक चुनना होता है।

• बोर्ड परीक्षा में, इन दोनों अनुपातों की गणना के साथ-साथ इनका महत्व भी पूछा जा सकता है। याद रखें कि कम ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात ऋणदाताओं के लिए ज़्यादा सुरक्षा दर्शाता है।

• यह अनुपात बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। गणना के सवालों में 'शुद्ध उधार आगम' या 'शुद्ध उधार क्रय' की सही पहचान करना और औसत निकालना न भूलें।

• इन अनुपातों की गणना के सूत्र और उनके महत्व पर विशेष ध्यान दें, क्योंकि बोर्ड परीक्षा में इन पर आधारित सीधे सवाल या केस स्टडी ज़रूर आते हैं।

• इन अनुपातों को निकालते समय, 'प्रचालन से आगम की लागत' और 'प्रचालन व्यय' के सभी घटकों को ध्यान से जोड़ना, क्योंकि यहीं पर अक्सर मार्क्स कट जाते हैं।

• निवल लाभ अनुपात और नियोजित पूँजी पर प्रत्याय (ROCE) पर आधारित प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछे जाते हैं। इनके सूत्र (फॉर्मूला) और गणना का अभ्यास बहुत अच्छे से करना।

• इन अनुपातों के सूत्र और उनकी गणना में इस्तेमाल होने वाली मदों को ध्यान से समझना, क्योंकि इसमें छोटी सी गलती से पूरा जवाब गलत हो सकता है। यह बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

• लाभप्रदता अनुपातों से बोर्ड परीक्षा में सीधे प्रश्न आते हैं, खासकर P/E Ratio और लाभांश भुगतान अनुपात की गणना पर। इनके सूत्र अच्छे से याद कर लेना और अभ्यास करना।

एक नज़र में रिवीज़न

› लेखांकन अनुपात = दो या अधिक लेखांकन संख्याओं के बीच गणितीय संबंध।

› जटिल अंकों को सरल बनाना, तुलना, समस्या पहचान, निर्णय में सहायक।

› अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ: लेखांकन आँकड़े, मूल्य स्तर, गुणात्मक पहलू, नीतियाँ भिन्नताएँ।

› अनुपात मुख्यतः 4 प्रकार के: तरलता, ऋण शोधन क्षमता, क्रियाशीलता, लाभप्रदता.

› चालू अनुपात = चालू परिसंपत्तियाँ / चालू दायित्व (आदर्श 2:1)

› तरल अनुपात = (तरल परिसंपत्तियाँ / चालू दायित्व); आदर्श 1:1; तत्काल तरलता मापता है।

› ऋण-समता अनुपात = दीर्घकालिक ऋण / शेयरधारकों की निधि; वित्तीय जोखिम का सूचक।

› ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात = दीर्घकालिक ऋण / नियोजित पूँजी; स्वामित्व अनुपात = अंशधारक निधि / नियोजित पूँजी

› व्यापारिक प्राप्य/देय आवर्त: संचालन कुशलता, वसूली/भुगतान गति दर्शाता है।

› संसाधन उपयोग दक्षता: बिक्री/विनियोजित पूँजी; बिक्री/स्थायी परिसंपत्ति; बिक्री/कार्यशील पूँजी।

› लाभप्रदता अनुपात: सकल लाभ, प्रचालन, प्रचालन लाभ – लाभ क्षमता मापते हैं।

› निवल लाभ अनुपात: शुद्ध लाभ; ROCE: नियोजित पूँजी पर रिटर्न

› RONW, EPS, बुक वैल्यू: अंशधरकों के निवेश पर वापसी दिखाते हैं।

› लाभांश भुगतान अनुपात (DPR): वितरित लाभांश का हिस्सा। P/E Ratio: शेयर बाज़ार मूल्य और EPS का संबंध।